आनन्दरामायण रूप गुणाधारित भगवन्नामो का तात्विक विश्लेषण

डॉ. पुष्पा देवी[1] , डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा[2]

[1]असिसटेण्ट प्रोफेसर संस्कृत विभाग, डॉ. राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय पूर्वा सुजान औरैया (उ. प्र.)

[2]असोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष विभाग, कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय इटावा (उ. प्र.)

सारांश

आनन्द रामायण में यह बताया गया है कि किसी कामनाकी पूर्ति के लिए किसी की उपासना करनी चाहिए। ब्रम्हतेज के लिये ब्रम्हण्पति इंद्रियों को किसी भी कामना की पूर्ति के लिये इंद्र संतान के लिए प्रजापति श्री व्रद्धि के लिये देवी माया)दुर्गा (तेजी व्रद्धि के लिए सूर्य, धन व्रद्धि के लिये आधो वसुओं, पराक्रम के लिये, अन्य के लिये अदिति, स्वर्ग की कमना के लिये देवताओं, रज्य इच्छा के लिये इला प्रतिष्ठा के लिये लोकमान्य अधिपत्य के लिये गंधर्वो स्त्री की कामना के लिये यज्ञ कोष के लिये वरुण विद्या के लिये शिव दाम्पत्य सुध के लिये पार्वती धर्म के लिये विष्णु वंश विस्तार के लिये पितरों आत्मरनक्षा के लिये पुण्यजनो तेजोवृद्धि के लिये मरुदगणों रज्य के लिये चौदह मनुओं अविचार की क्रिया के लिये राछय मनोदंड मिलवित कामपूर्ति के लिये चन्द्रमा निष्काम होने के लिये परमेश्वर मोक्ष के लिये भगवान रामचन्द्र की उपासना करनी चाहिये।

) आनन्दरामायण रामायण मनोहरकांड सर्ग 9 श्लोक 160से 169)

यहां यह बताया गया है कि राम के समान न तो कोई देवता हुआ है और न होगा। रामेण सदृश्यों देवों न भूतो न भविष्यति तसमा प्रियनेन रामचन्द्रम प्रज्यूते)आनन्दरामायण रामायण मनोहरकांड सर्ग 9श्लोक 170)

प्रस्तावना

प्रतीक भारतीय संहिता में विशेष महत्व रखता है। यह वैदिक साहित्य से लेकर अद्यतनीय साहित्य तक अभिव्यास है। प्रतीकों की अपनी भाषा होती है वे बोलते है)हमारे सांस्कृतिक प्रतीक पृष्ठ 5)

डॉ 0ऊषापुरी विद्यावाचस्पति के अनुसार भावों की अभिव्यक्ति के लिये भाषा बहुत सशक्त माध्यम है। ज्यों ज्यों भावों की गहराई आती जाती है।भाषा की तरह तरह की भावमयी तरह तरह की भाषायें स्वर का उतार चढाव उसकी कमी बहुत सीमा तक पूरा कर देता है। किन्तु लिखित रूप में इन सबकी गुंजाइश नहीं रहती है। अतः सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिये स्थूल प्रतीकों का सहारा लेना पडता है। प्रतीक योजना मनुष्य की इंद्रियों के भोग विषयो में सिमटी रहती है।)आर 0मिथिक कोष, भूमिक पृष्ठ 43)

मनुष्य के लिये सब समय पूरी बात कहना या लिखना शक्य नही होता है जिन्हे दूसरे देखकर समझ सकें। बहुत समय और स्थल एसे होते है जहां अपने और दूसरों के लिये पहचानने का चिन्ह निश्चित करना पडता है।

(क) रूप आधारित भगवाननाम-

यह संसार नाम रूपात्मक है जैसा कि संस्कृत जगत के प्रख्यात आभाजक नाम रूपात्मकवतम जगत से सिद्ध है। अतः इस जगत में नाम और रूप का नाम अन्यानस्तिरक नाम, रूप लीला और धाम इस चतुष्दयी में नाम और रूप पले कहे गये है, नाम रूप द्वि ईश उपाधि) श0च0मानसबाल0) में गोस्वामी तुलसीदास ने भी नाम और रूप

को ईश्वर की दो उपाधियों कहा है। इससे यह सिद्ध है कि नाम का सर्वाधिक तत्पश्चात रूप का भी महत्व होता है। कहा भी गया है कि –

यादृष वर्तते रूपम तादृषं लमते फलम

तत्वापारिजात 5/ 25अतएव इस प्रकारण में रूप आधारित भगवान नामों का तात्वक निरूपण प्रस्तुत है। रूप का शरीर का कलापक्ष कह सकते है। रूप की पूरकता में अंग वस्त्र तथा अलंकारों)आभूषणों (का स्थान होने से सर्वाधिक महत्व होता है। अतः सर्वाधिक भगवान नामों को अंग वर्णनात्मक वस्त्र सज्जा पर तथा अलंकरण सम्बन्धी तीन भागों में व्यक्त किया जा सकता है।

1. **अंग वर्णनात्मक**

वायु, विद्या वाणी वैभव तथा इन पाँच से वायु)शरीर (की प्रथम स्थानीयता प्रमाणित है। शरीर अवयव)अंग (प्रधान होता है। शरीर के प्रमुख अंग नेत्र, मुख, नाक , भौह, कान, होंठ कपोल, कंठ, वक्ष, नाभि तथा पैर होते है। अतः कवियों तथा मनीषियों ने किसी भी रूप वर्णन में इन अंगों की चारूता का ही निरूपण किया है। प्रायः कवियों ने रचनाओं में भगवान की रूप माधुरी का वर्णन किया है में इन्ही अंगों से सम्बन्धित जो हरिनामा गली प्रस्तुत की है उसमें से कतिपय नामों का तत्वात्मक विवेचन यहां प्रस्तुत है। रूप का संसार मे सर्वोपरि महत्व है। रूप के आधार पर ही संसार में नाम रखा जाता है तथा नाम रूप के अनुसार ही संसार का व्यवहार होता है। तर्क संग्रह)प्रष्ठ सं4 0) में 24गुण बतलाये गये है जिनमें रूप पहला गुण है जोकि नेत्र के द्वारा ग्रहण किया जाता है।

"चक्षुमत्रिग्राह्.यो गुणोरूपम् ।"

अतएव कवियों ने रूप की अतिरायता था अलौकिकता प्रदर्शित करने के लिये नेत्रों की तुलना विभिन्न उपमानों से की है जहां पर नेत्रों की पक्षपाथीनता, निर्लिसता या अनासक्ति प्रदर्शित करना अपेक्षित होता है, वहाँ कवि गठा कमल से नेत्रों को उपमित करते है। आनन्दरामायण में इसी भाव की पुष्टि अम्बु जाक्षः सा 0का9 0/ 24 अम्बुजेक्षण वि0का5 0/ 18अम्बुरूहेक्षणः सा0का7 0/10 अरविन्दनयनः वि0का6 0/ 21अरविन्दक्षः वि 0का9 0/ 19 अरविन्दनेत्रः सा0का4 0/ 14अम्बुअजलोचनः वि0का3 0/18 कामलोचनः वि0का5 0/ 17नव कंजलोचन वि0का2 0/ 21कमल पत्राक्षः रा0का3 0/ 13नलिनायतेक्षणः वि0का4 0/ 14पुष्करलोचन वि0का2 0/ 21पंकजनेत्रः रा0का22 0/ 21पुण्डरीकाक्षाः वि0का1 0/ 16पुष्कराक्षः सा0का4 0/ 17पुण्डरीकामिरामाक्षः वि0का3 0/ 24पदमपलाशलोचनः वि0का6 0/ 16पदमाक्षः सा0का2 0/ 23पदमगर्भारूपेदणः रा0का24 0/ 21आदि एकभावमूलक अनेक शब्दों)भगवन्नामों (में हुई है।

"शोभते मानवो लोके अलंकारैरलंकृतः।"
अलंकारचस्दिका 1/38

अलंकारणात्मक सर्वाधिक भगवन्नामों के तात्विक विवेचन के प्रस्तुत प्रकरण में यह कहना असंगत न होगा कि किरीट कुण्डल वनमाला कौस्तुभमणि, कांची, केयर आदि जड .पदार्थ लीक निराम हीं नहीं अपितु लोकोत्तर सुन्दर परब्रह्म प्रभु श्री राम के अचित्यसुन्दर श्रीविग्रह में क्या श्री वृद्धि करेंगें। प्रस्तुत श्रीविग्रह में स्थान पाकर वे स्वयं को धन्य करते है। इस प्रकार यह स्वतरू स्कूरत्कुण्डलमडितानन: वि0का6 0/ 16में कानों चमकते है। कुण्डलों में सुशोभित मुखवाले सगवतंसविलासः म0का4 0/ 33तथा सर्ग वि0का3 0/ 12में बनमालाधारी आदि नाम रूपधारित अलंकरण सम्बंधी भगवन्नाम है।

(**ख**) **गुणाधारित भगवन्नामः**

गुणाधारित भगवन्नाम-गुणाधारित भगवन्नामों के तात्वक विवेचन के प्रस्तुत प्रकरण मे गुणो की स्थिति का विवेचन करना सुतराम अपेक्षित है। संसार में गुणों का अतीव महत्व होता है। रूप को यदि शरीर कलापक्ष कहें तो गुण शरीर के भावपक्ष में गृहीत होंगे। रूप को देखकर दृष्ट के मन में स्थायी एवं अमिट प्रभाव पडता है। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति रूपवान नहीं है किंतु गुणाढ्य है तो विज्ञ जनों द्वारा समाज में वह अर्चित एवं बंदित होता है तथा रूपवान होते हुये भी यदि कोई गुणवान होता है तो वह समाज मे सुशोभित नही होता जैसा कि संस्कृत जगत के प्रसिद्ध इस श्लोक—

"रूप यौवन सम्पनः विशाल कुल संभवाः ।
विद्याहीन न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः । ।"

इससे सिद्ध है कि एतदतिरिक्त यह भी कहा गया है कि गुण, गुणज्ञ के पास जाकर गुण ही बने रहते है तथा वही गुण गुणहीन व्यक्ति के पास दोष बन जाते है यथा च निम्नलिखित

"गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति तेतिगुण प्राप्त भवन्ति दोषः।
आस्वाद्यतोया प्रवहन्ति नद्यः समुद्रमासद्य भवन्त्यपेया। ।"

श्लोक से प्रमाणित है कि तर्क संग्रह पृष्ठ 8मे रूप रस गंध स्पर्श आदि 24गुणों का उल्लेख हुआ है जबकि व्यास जी ने भागवत में)1/16/26 से 29तक (सत्य, शौच, दया, क्षमा

उपसंहार-

अध्ययन की सुबिधा की दृष्टि से इस शोध प्रबन्ध को 7अध्याय में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय उपादद्यापरक है। द्वितीय अध्याय में आनन्दरामायण में भगवन्नामों का वर्गीकरण किया गया है। इसमें तत्वात्मक एवं तथ्यात्मक भगवन्नामों का निरूपण हुआ है। तृतीय अध्याय में आनन्दरामायण के भगवन्नों का दार्शनिक विश्लेषण हुआ है। इसमें सांख्य योग नया वैशेषक, मीमांसा और वेदांत की दृष्टि से भगवन्नामों का विश्लेषण हुआ है। इसस्में लीला गुण वस्तु अलंकार और वर्ण रूपात्मक प्रतिको का निरूपण हुआ है। पंचम अध्याय में आनन्द रामायण के लीलाधारित भागवन्नामों का तात्वक विश्लेषण हुआ है। इसमें प्रत्यक्ष लीलाधारित परोक्ष लीलाधारित लीला सांकेतिक और धाम परक भगवन्नामों कातात्विक विश्लेषण हुआ है। षष्ठ अध्याय में आनन्द रामायण के रूप गुणाधारित भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण हुआ है। इसमें रूप घटित और गुणाधारित भगवन्नामों का तात्विक विश्लेषण हुआ है। सप्तम अध्याय में आनन्द रामायण की महिमा और लोक कल्याण पर प्रकाश डाला गया है इसमें भगवन्नामों की महिमा प्रसि 0भगवन्नामों की उपादेयता पर प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ

1. सा. 1/3/3
2. सा.का. 2/10 म.का.9 / 16से 169
3. सा.का.3/ 24म.का.9 /त5 17/25
4. म.का.4 /6 24/7 22/9 28/31
5. या.का.6 / 26म.का.6 /31
6. वि.का.5 / 18सा.का.7 /10
7. सा.का.4 / 14रा.का.3 //13
8. रा.का.24 / 2म. का.4 /33त